*Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities* ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 153-156

# डा0 राममनोहर लोहिया एवं लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समाजवादी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

**राकेश काला** [1*]

[1] राजनीति विज्ञान विभाग, हे0न0ब0ग0के0 विश्वविद्यालय, बी0जी0आर0 कैम्पस पौड़ी, उत्तराखण्ड

*Corresponding Author Email:rakeshkala@gmail.com

Received: 03.08.2017; Revised: 13.09.2017; Accepted: 20.10.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

**सारांश–:** डा0 राममनोहर लोहिया एवं जयप्रकाश नारायण आधुनिक भारत में समाजवाद कें प्रमुख प्रवक्ता रहे हैं। दोनो के विचार गॉधीवाद चिन्तन से अनुप्रमाणित हैं। दोनो ही समाजवादी विचारक होने के बावजूद उनके समाजवादी विचारों की व्याख्या में मौलिक अन्तर रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में दोनो ही विचारकों के समाजवादी चिन्तन के मौलिक अन्तर को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

**कुंजी शब्द:** समाजवाद, जनतन्त्र, विकेन्द्रीकृत, पूँजीवाद, मार्क्सवाद, प्रजातंत्रीयकरण वर्गसंघर्ष, अस्पृष्यता।

## प्रस्तावना

डा0 राममनोहर लोहिया आधुनिक भारत के ऐसे प्रतिभाशाली समाजवादी थे, जिन्होंने गाँधीवादी विचारों को अपनाते हुए समाजवाद की नई एक व्याख्या प्रस्तुत की तो वहीं लोकनायक जयप्रकाश नारायण को भारतीय समाजवाद का अग्रणी प्रवक्ता माना जाता है। जिनके विचार भी गाँधीवादी चिन्तन से अनुप्राणित हैं। इन दोनों समाजवादी चिन्तकों के विचारों का तुलनात्मक विवरण निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है–

**समाजवादी दृष्टिकोण–**यद्यपि डा0 लोहिया तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण दोनों का समाजवादी चिन्तन गाँधीवादी तत्वों से प्रभावित है, तथापि उनकी व्याख्या में मौलिक अन्तर है। डॉ0 लोहिया का समाजवाद 'जनतंत्र की भावना तथा विकेन्द्रीकृत व्यवस्था से युक्त मानव मात्र के लिये सुख और सम्पन्नता लाने वाला विचार है।'[1] लोहिया जी का समाजवाद, पूँजीवाद और मार्क्सवाद का मिश्रण या सुधार नहीं था बल्कि इन दोनों से भिन्न एक तीसरी नई व्यवस्था थी। इससे बदलती परिस्थितियाँ व मानव कल्याण की भावना पुनर्जीवित होती है। उनका कहना था कि ''समाजवाद उस भूमि को विच्छिन्न कर देगा जिस पर पूँजीवाद व मार्क्सवाद खड़े है तथा वह अपनी ओर से आर्थिक लक्ष्यों और सामान्य लक्ष्यों में एकता हासिल करेगा।[2]

डॉ0 लोहिया का जनतंत्र पर अत्यधिक विश्वास होने के कारण जनतंत्र ही उनके समाजवाद का मूल आधार था। वे जनतंत्र के बिना समाजवाद को अधूरा मानते थे। डॉ0 लोहिया ने एशियाई सन्दर्भ में समाजवाद की संकल्पना को प्रतिपादित करते हुए मत व्यक्त किया कि एशियन समाजवाद का मुख्य उददेश्य है– प्रशासन का प्रजातंत्रीयकरण, छोटी मशीनों की थोडी पूँजी लगाकर उपभोग, सम्पत्ति का समाजीकरण तथा अधिकाधिक आर्थिक एवं राजनीतिक समाजीकरण और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने का जो तरीका डॉ0 लोहिया ने सुझाया वह है गाँधीवादी जन आन्दोलन का । वे हिंसा से चिढते थें। अतः साम्यवादियों की पूँजीवाद की व्याख्या उन्हें पसन्द नहीं थी और वर्ग–संघर्ष का तरीका उन्हें अनैतिक लगता था।[3]

डॉ0 लोहिया की भाँति जयप्रकाश नारायण का समाजवादी चिन्तन भी गाँधीवादी तत्वों से अनुप्राणित है। महात्मा गाँधी जयप्रकाश को भारतीय समाजवाद का सबसे बड़ा विद्वान मानते थे। जयप्रकाश नारायण ने अपनी पुस्तक 'Why Socialism' ने यह बतलाया है कि समाजवाद एक व्यक्तिगत आचरण संहिता न होकर सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है। जयप्रकाश नारायण समाजवाद को सामाजिक, आर्थिक पुनर्निर्माण का एक सम्पूर्ण सिद्वान्त मानते थे। उनके अनुसार यह वैयक्तिक आचार नीति के सिद्वान्त से भी बहुत बड़ी चीज है।[4]

जयप्रकाश नारायाण के अनुसार – समाजवाद आर्थिक और सामाजिकक पुनर्निर्माण का सिद्वान्त है। समाजवाद का उददेश्य समन्वित विकास करना है। जयप्रकाश ने समाजवाद के माध्यम से अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का निदान ढूँढ़ा है। उनके अनुसार समाजवादी राज्य को मूलभूत मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए और नैतिकता विहीन जीवन को अस्वीकार करना चाहिए।[5] समाजवाद की सफलता के लिए जयप्रकाश ने लोकतांत्रिक राज्य की अनिवार्यता पर बल दिया।

जयप्रकाश नाराण अहिंसक जन– आंदोलन के माध्यम से समाजवाद की स्थापना का विचार प्रकट करते हैं। उनके अनुसार समाजवाद की स्थापना दीर्घ विकास एवं प्रयत्नों पर आधारित होती है। वर्ग– संघर्ष के बिना समाज में समाजवाद स्थापित नहीं होता है अपितु वास्तविक काम करने वाले श्रमिकों तथा पूँजीवादी समाज के शोषित वर्गों के समर्थन से ही सम्भव है। शोषित वर्ग द्वारा शोषण का विरोध सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करके एक शोषण विहीन समाजवादी समाज की स्थापना में सहायक बनता है तथा बुद्विजीवी लोग इस संघर्ष में अपना वैचारिक योगदान देते हैं।[6]

जयप्रकाश नाराण लोकतांत्रिक समाजवाद के पक्षधर है, उनका यह मानना है कि समाजवाद कभी भी भारतीय संस्कृति का विरोधी नहीं हो सकता है। भारतीय संस्कृति के मूल्यों को पूरी तरह सुरक्षित रखते हुये भी हम देश में समाजवाद ला सकते है। भारत में बन्धुता और सहयोग की भावना हमेशा से सबल रही है। भारत की संयुक्त परिवार प्रणाली में हमें समाजवादी उदार प्रवृत्तियों के लक्षण दिखाई देते है। अतः जयप्रकाश के अनुसार जब भारत की परम्पराएँ उदार समाजवाद के लक्षणों से युक्त है तो भारतीय संस्कृति और समाजवाद को परस्पर विरोधी कहना भ्रामक है।[7]

**वर्ग संघर्ष, जाति– प्रथा, अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिकता जैसी सामाजिक समस्याओं के बारे में दृष्टिकोण–** भारत में अनेक सामाजिक समस्याओं के सन्दर्भ में डॉ0 लोहिया और जयप्रकाश नारायण ने अपने विचार दिये है। वर्ग एवं वर्ग – संघर्ष के सन्दर्भ में डॉ0 लोहिया ने स्पष्ट व्याख्या एवं आधार प्रस्तुत किया। जबकि जयप्रकाश नारायण ने उतना उपयुक्त विश्लेषण वर्ग के विषय में नही किया।

भारत वर्ष में डॉ0 लोहिया ने वर्ग व्यवस्था का सूक्ष्म अध्ययन किया और उसे अत्यन्त मौलिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि एक वर्ग समाज में मुख्य वस्तु है – शोषण।[8] शोषणकर्ताओं का अस्त्र विशेषाधिकार होता है। डॉ0 लोहिया के मतानुसार भारत में बुनियादी किस्म के विशेषाधिकार है – जाति, सम्पत्ति और भाषा।[9] भाषा सम्बन्धी विशेषाधिकार से डॉ0 लोहिया का अभिप्राय अंग्रेजी भाषा के ज्ञान से है। आज अंग्रेजी सामन्ती भाषा है और हिन्दी हिन्दुस्तानी, तमिल, तेलगु, मराठी वगैरह लोक भाषाएँ रही है। [10]

डॉ0 लोहिया के विचार में वर्ग उद्भव का दूसरा कारण जाति सम्बन्धी विशेषाधिकार है। डॉ0 लोहिया के अनुसार, जाति और वर्ग ऐतिहासिक गति विज्ञान की दो मुख्य शक्तियाँ है। इन दोनों के बीच खींचतान चलती रहती है और इनके टकराव से इतिहास आगे बढ़ता है। [11] डॉ0 लोहिया का मानना है कि 'जाति रूढ़िवादी शक्ति का प्रतीक है, जो जड़ता को बढ़ावा देती है, जाति एक सुगढ़ या सुडौल ढ़ाँचा है। वर्ग एक शिथिल या ढीला – ढाला संगठन है। आज तक का सारा मानव इतिहास जातियों एवं वर्गों के निर्माण और विलय की कहानी है। जातियाँ शिथिल होकर वर्गों में बदल जाती है, वर्ग सुगठित होकर जातियों का रूप धारण कर लेते है।[12]

डॉ0 लोहिया की तुलना में जयप्रकाश नारायाण न वर्ग – संघर्ष के सन्दर्भ में इतनी विस्तृत विवेचना नही की जितनी कि डा0 लोहिया ने। लेकिन फिर भी जयप्रकाश नारायण की विचारधारा में कुछ छिट–पुट विचार अवश्य मिल जाते हैं।

जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि 'भारतवर्ष में भी वर्ग–संघर्ष की संभावना पैदा हो सकती है।' जयप्रकाश नारायण भी डा0 लोहिया के समान ही वर्ग उद्भव में जाति प्रथा और सम्पत्ति को मूल मानते हैं।

डॉ0 लोहिया और जयप्रकाश नारायण ने जाति प्रथा पर तीव्र प्रहार किया है। डॉ0 लोहिया ने कहा –'आर्थिक– गैर बराबरी और जात–पात, जुड़वा राक्षस हैं और अगर एक से लड़ना है तो दूसरे से भी लड़ना ज़रूरी है।'[13] जाति को डॉ0 लोहिया और जयप्रकाश नारायण ने जड़ वर्ग के रूप में परिभाषित किया है क्योंकि व्यवस्था में इतनी जकड़न होती है कि एक जाति का मनुष्य दूसरी जाति में प्रवेश के लिये अयोग्य बना दिया जाता है। जाति व्यवस्था मनुष्य को सामाजिक दृष्टि से चारों तरफ से अपने वातावरण में जकड़ लेती है जिससे निकलना मनुष्य के लिये असम्भव हो जाता है।[14]

जहॉ डॉ0 लोहिया जाति के उन्मूलन के लिये सामाजिक क्रान्ति या सामाजिक सुधार का सुझाव देते है, बाद में आर्थिक विकास भी तो वहीं जे0पी0 सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास दोनो को ही उपयुक्त मानते हैं। डॉ0 लोहिया जाति उन्मूलन के साथ–साथ अस्पृश्यता निवारण पर भी काफी बल देते हैं, इस संदर्भ में जयप्रकाश का भी वैचारिक साम्य है। दोनो ही विचारक अस्पृश्यता की कड़ी निन्दा करते हैं।

डॉ0 लोहिया का मत है कि साम्प्रदायिकता समाप्त करने के लिये धार्मिक अनुदारवादिता का अन्त होना चाहिये। हिन्दू–मुसलमान की पूर्ण एकता का गॉधीवादी सिद्धान्त डॉ0 लोहिया की दृष्टि में आंशिक रूप से ही व्यावहारिक हैं। डॉ0 लोहिया के अनुसार–'हिन्दू कितना ही उदार क्यों न हो जाये किन्तु राम और कृष्ण को मोहम्मद से कुछ थोड़ा अच्छा समझेगा और मुसलमान भी चाहे कितना ही उदार हो जाये अपने मोहम्मद को राम और कृष्ण से अधिक आदर देगा।[15]

डॉ0 लोहिया की भॉति जयप्रकाश भी साम्प्रदायिकता की समस्या को बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखते थे। उन्होने इसके समाधान के लिये जन–साधारण के सहयोग का विचार रखा। उनका कहना था कि साम्प्रदायिकता का अंत सिर्फ सरकार को ही नही करना है आप लोगों का इसमें कोई कर्तव्य है। यथार्थ बात तो यह है कि साम्प्रदायिकता आप ही मिटा सकते हैं। आप में एक–एक का यह धर्म होना चाहिये कि जहॉ भी साम्प्रदायिकता देखें वहॉ उसका सिर कुचल दीजिये।[16]

जयप्रकाश इस समस्या को आर्थिक दृष्टि से देखते हैं पर यहॉ जयप्रकाश लोहिया के विपरीत एक समाज सुधारक के समान समस्या का समाधान रखते हैं और आर्थिक विश्लेषण भी करते हैं। उनका मत था कि साम्प्रदायिकता की समस्या अधिकांशतः एक आर्थिक प्रश्न है जो उत्पन्न हुआ इस कारण से कि लगभग सभी किसान मुसलमान हैं तथा ज़मीनदार हिन्दू हैं.....। लेकिन चूँकि यह वर्ग विभेद साम्प्रदायिक विभेद के रूप में ही गठित होता है, इसीलिये इन झगड़ों को साम्प्रदायिक रंग दे दिया जाता है। यह सबको विदित है कि जनसाधारण में मजहबी जुनून और आर्थिक क्रान्तिवाद साथ–साथ चलते हैं।[17] इसीलिये जयप्रकाश साम्प्रदायिकता की समस्या के समाधान के लिये आर्थिक समानता का विचार भी रखते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि डॉ0 लोहिया और जयप्रकाश नारायण दोनो ने समाजवाद की याख्या भारतीय सन्दर्भ में की है और दोनो पर गॉधी का प्रभाव स्पष्ट रूप से प्रभावी है परन्तु उनकी व्याख्या में मौलिक अन्तर व्याप्त है। यद्यपि साम्प्रदायिकता के प्रश्नों को समाप्त करने के लिये जितने स्पष्ट और आदर्शवादी साधन जनसामान्य के समक्ष डॉ0 लोहिया ने रखे उतने स्पष्ट साधन जयप्रकाश ने प्रतिपादित नही किये। परन्तु दोनो ही विचारकों का अन्तिम उद्देश्य कुरीतियों का निराकरण ही था।

## सन्दर्भ सूची


1–शर्मा, यतीन्द्र नाथ, डॉ0 लोहिया का समाजवादी एवं अर्थ दर्शन, सस्ता साहित्य मन्डल, नई दिल्ली, 1953, पृ0सं0–146

2–लोहिया, राममनोहर, मार्क्स–गॉधी और समाजवाद, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1963, पृ0सं0–328

3–फाड़िया, बी0एल0, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2008, पृ0सं0–255

4–नारायण, जयप्रकाश, Towards Struggle, यूसूफ महर अली द्वारा सम्पादित, पदमा पब्लिकेशन, मुम्बई, 1946, पृ0सं0–65

5–फाड़िया, बी0एल0, पूर्वोक्त, पृ0सं0–235

6–तदैव, पृ0सं0–236
7–तदैव, पृ0सं0–236
8–सिंह, अजीत, आधुनिक भारतीय राजनीकि एवं समाजवादी विचारक, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1990, पृ0सं0–215
9–तदैव, पृ0सं0–216
10–लोहिया, राममनोहर, भाषा, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1965, पृ0सं0–46
11–गाबा, ओमप्रकाश, राजनीतिक चिन्तन की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2007, पृ0सं0–315
12–तदैव, पृ0सं0–316
13–लोहिया, राममनोहर, जाति–प्रथा, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, 1964, पृ0सं0–18
14–भट्ट, अनिल, कास्ट, क्लास एण्ड पॉलिटिक्स, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1957, पृ0सं0–70
15–सिंह, अजीत, पूर्वोक्त, पृ0सं0–195
16–बेनीपुरी, रामवृक्ष, जयप्रकाश की विचारधाराएँ, राष्ट्रीय प्रकाशन, मंदिर लखनऊ, 1991, पृ0सं0–302
17–नारायण, जयप्रकाश, संघर्ष की ओर, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी लिमिटेड, आगरा, 1948, पृ0सं0–120

*******